प्राक्कथन

मोहन राकेश आधुनिक हिन्दी साहित्य के बहुचर्चित व्यक्ति रहे हैं। उनका रचना संसार, एक ईमानदार लेखक की सहज अभिव्यक्ति है।

मोहन राकेश को पढने का मौका मुझे बी.ए.तथा एम.ए.की पढाई के दौरान मिला था। मैंने बी.ए. के पाठ्यक्रम में निर्धारित राकेश के 'आधे-अधूरे', 'आषाढ का एक दिन' तथा (एम.ए. के पाठक्रम में) 'लहरों के राजहंस' नाटक पढे थे। राकेश के नाट्य-साहित्य ने मुझे प्रभावित किया था। इसीलिए मैंने उनका समग्र साहित्य पढना शुरु किया। इस दौरान मुझे महसूस हुआ कि राकेश की हिन्दी साहित्य में नाटककार के रुप में जितनी चर्चा हुई है उतनी उपन्यासकार के रुप में नहीं। इसलिए मैंने राकेश के उपन्यासों का विशेष अध्ययन करना चाहा। दूसरी तरफ मेरे गुरुवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण की प्रेरणा इस विषय के चयन के पीछे आधारभूत रही है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का विषय है -- 'मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन'

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित सवाल खडे हुये थे --

१) मोहन राकेश का जीवन किस तरह बीता था ?

२) अपने काल की किन परिस्थितियों का प्रभाव राकेश के उपन्यासों पर पडा है ?

३) राकेश के उपन्यासों के विषय कौनसे हैं ?

४) राकेश ने अपने उपन्यासों में कौनसी समस्याओं का चित्रण किया है ?

लघु प्रबन्ध के लेखन के दौरान उपर्युक्त सवालों के जो जबाब मैंने पाये उन्हें मैंने 'उपसंहार' में निष्कर्ष के रुप में लिख दिया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में मोहन राकेश जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया गया है। किसी भी व्यक्ति की जीवन दृष्टि उसके अपने भोगे हुए जीवन की यथार्थ उपज होती है। राकेश जी के व्यक्तित्व निर्माण में घर-परिवार, मित्र आदि का भी योगदान रहा, उसे इस अध्याय में देखा गया है। उन्होंने अपने समय और जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक स्थिति और प्रत्येक धड़कन को निजी आंतरिक दृष्टि से पहचाना है और उसे सही एवं सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है।

द्वितीय अध्याय में मोहन राकेश के उपन्यासों के रचना परिवेश का विवेचन किया गया है। इसमें राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक आदि परिस्थितियों का वर्णन किया है और इन परिस्थितियों का राकेश के उपन्यासों पर किस तरह प्रभाव पड़ा है इसका भी वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय में मोहन राकेश के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय दिया है। राकेश के `अँधेरे बंद कमरे`, `न आनेवाला कल` तथा `अंतराल` इन तीनों उपन्यासों की कथावस्तु केन्द्रिय पात्र तथा उद्देश्य पर संक्षेप में विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय में - मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित समस्याओंका विस्तृत विवेचन किया गया है। यह अध्याय इस लघु शोध-प्रबन्ध का महत्वपूर्ण अध्याय है। राकेश ने जीन - जीन समस्याओंका चित्रण किया है उन सबपर इसी अध्याय में प्रकाश डाला है।

पंचम अध्याय उपसंहार का है। यह इस लघु शोध-प्रबन्ध के विषय का सार रुप है। मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं के अनुशीलन के बाद जो निष्कर्ष मेरे हाथ लगे उनको इसी अध्याय में लिख दिया है। अंत में आधार ग्रन्थ एवं संदर्भ गन्थ की सूची दी है।

इस लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हित चिंतकों के प्रति कृतज्ञता-भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

यह लघु शोध-प्रबन्ध मेरे आदरणीय गुरुवर्य डॉ. वसन्त केशव मोरे जी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के निर्देशन में लिखा गया है। यदि आप का मार्गदर्शन न मिल पाता तो यह कार्य कभी भी संपन्न न होता। आप के पास तो ज्ञान का सागर ही है, किन्तु मैंने अपनी क्षमता के अनुसार कुछ ही ज्ञान - कणों को पाया है। आप का मार्गदर्शन ही मुझे बल देता रहा, जिसकी वजह से यह कार्य मैं पूर्ण कर सका। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद भी आपने निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी अत्यंत सहायता की है। इस शोध विषय के बारे में जब जब संभ्रम निर्माण हुआ, तब तब अपने मुझे हतोत्साह होने नहीं दिया। आपके आत्मीयपूर्ण निर्देशन ने इस शोध कार्य के अंतर्गत आनेवाली कठिनाइयों को कभी अनुभव नहीं होने दिया, बल्कि हर बार मुझे नया उत्साह मिलता गया। आपकी इस सहृदयता को आभार के चन्द लब्जों में बाँधकर मैं सीमित नहीं करना चाहता। परन्तु यह बात निश्चित है कि, आपकी इस कृपा का एहसास मुझे हमेशा रहेगा।

सच बात तो यह है कि मेरी शिक्षा के खिलाफ मेरे घरवाले ही पड गये थे। लेकिन परमात्मा ने मेरे साथ बुरा नहीं होने दिया। जीवन में कुछ ऋण ऐसे होते हैं, जिनसे उऋण होना संभव नहीं होता और न उऋण होने की इच्छा ही होती है। इसी तरह का ऋण मुझपर है श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, कर्मवीर भाऊराव पाटील, कॉलेज, इस्लामपुर का। अगर वे मेरे जीवन में न आते तो मेरे घरवालों को मैं ईंट का जबाब पत्थर से न दे पाता। आज भी मैं इन्हीं के आशीर्वाद से जिंदगी जी रहा हूँ। बी.ए. से एम.फिल.तक की शिक्षा में मेरे लिए जो भी कठिनाई महसूस हुई उन्हें दूर करने का कार्य आपने किया। अंत: आप का आभार प्रकट करने के लिए शब्द असमर्थ हैं। भविष्य में भी आप के ऋण में रहने में ही मुझे संतोष होगा।

स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापुर के प्रा.एस.एम. जाधव तथा उनकी सुविध पत्नी प्रा.एम.एस.जाधव का आशीर्वाद मेरे साथ रहा उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

माता-पिता, स्नेह निर्झर एवं मित्रों का आभारी हूँ, जिनकी शुभ - कामनाएँ मेरे साथ थीं। मेरी शिक्षा का खर्च वहन करनेवाले, माणिक रायते, तथा शिवाजीराव जगताप और उनके साथी शिवाजी रंगराव पाटील का भी मैं आभारी हूँ।

लघु प्रबन्ध लेखन के दौरान कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, इस्लामपुर के ग्रंथपाल श्री एस.एस.पाटील ने मेरी काफी मदत की है अत: मैं उनके प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। इस लघुशोध-प्रबन्ध का टंकण सुचारु रुप से करनेवाले श्री बालकृष्ण सावंत के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

अंत में उन सब का आभार प्रकट करके कि जिनका यह कार्य संपन्न बनाने में प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष सहयोग मिला, मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अत्यंत विनम्रता के साथ विद्वानों के सम्मुख परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

आपका कृपाप्रार्थी

श्री रमेश सोपान मोटे

शोध-छात्र

कोल्हापुर।

दिनांक :२८:४:१९९३।